## मूल्यांकन के उपकरण (Tools of Evaluation) →

(1) **अवलोकन (Observation)** → अवलोकन व्यक्ति के व्यवहार के मापन की अत्यन्त प्राचीन विधि है। व्यक्ति अपने आस-पास घटित होने वाली विभिन्न क्रियाओं तथा घटनाओं का अवलोकन करते रहते हैं। उदाहरण - व्यक्ति या बालक/बाला के बाह्य व्यवहार को देखकर उसके व्यवहार का वर्णन करने से है।

**परिभाषा → अवलोकन (observation) →**

* पी० वी० यंग के अनुसार "वैज्ञानिक अवलोकन में निश्चित उद्देश्यों के निर्माण, आयोजन तथा आलेखन में व्यवस्था तथा वैज्ञानिक परीक्षण एवं नियन्त्रण को लागू करना आवश्यक हो जाता है।"
* सी० एच० मोजर के अनुसार "अवलोकन में कानों तथा वाणी की अपेक्षा आँखों का अधिक प्रयोग होता है।
* अंग्रेजी शब्दकोश के अनुसार "कार्य कारण अथवा पारस्परिक सम्बंध को जानने के लिए घटनाओं को ठीक उसी रूप में देखना तथा उनका आलेखन करना अवलोकन कहलाता है।

Scanned with CamScanner

छोटे बच्चों के व्यवहार का मापन करने के लिए यह विधि अत्यन्त उपयोगी है छोटे बच्चे मौखिक तथा लिखित परीक्षाओं के प्रति जागरूक नहीं होते हैं। जिसकी वजह से मौखिक तथा लिखित परीक्षणों के द्वारा उनका मापन करना कठीन हो जाता है। व्यक्तित्व के गुणों का मापन करने के लिए भी अवलोकन का प्रयोग किया जा सकता है। छोटे बच्चों, अनपढ़ व्यक्तियों मानसिक रोगियों, विकलांगों तथा अन्य के लिए व्यवहार मापन करने के लिए अवलोकन एक मात्र उपयोगी विधि है। अवलोकन की सहायता से संज्ञानात्मक, भावात्मक आदि व्यवहारों का मापन किया जा सकता है।

अवलोकन करने वाले व्यक्ति की दृष्टि से अवलोकन दो प्रकार का होता है। स्व अवलोकन (Self Observation) तथा बाह्य अवलोकन (External Observation) है। स्व अवलोकन में व्यक्ति अपने स्वयं के व्यवहार का अवलोकन करता है जबकि बाह्य अवलोकन में अवलोकनकर्ता अन्य व्यक्तियों के व्यवहार का अवलोकन करता है। निःसन्देह स्वयं के व्यवहार का ठीक-2 अवलोकन करना एक कठिन कार्य होता है जबकि अन्य व्यक्तियों के व्यवहार को देखना तथा उसका लेखा-जोखा रखना सरल होता है। वर्तमान समय में प्रायः अवलोकन से अभिप्राय अवलोकन कर्ता के द्वारा दूसरे व्यक्तियों के व्यवहार के अवलोकन को माना जाता है।

Scanned with CamScanner

## अवलोकन की विशेषताएँ →

① मानव इन्द्रियों का प्रयोग → अवलोकन में मानव ~~ज्ञानेन्द्रियों~~ कान, वाणी बल्कि विशेष रूप से आँखों का प्रयोग किया जाता है। मोजर ने कहा है कि अवलोकन में कान एवं वाणी की अपेक्षा नेत्रों का अधिक प्रयोग किया जाता है।

② प्राथमिक सामग्री को प्राप्त करना → अवलोकन की मुख्य विशेषता विद्यालय में या घटनास्थल, पुस्तकालय, पिकनिक, खेल के मैदान में वस्तुओं को देखकर विद्यार्थियों से सम्बंधित प्राथमिक सामग्री का संकलन करना है।

③ सूक्ष्मता → अवलोकन का अर्थ देखना ही नहीं है वरन् घटना का गहन व सूक्ष्म अध्ययन भी करना है। अवलोकन कर्त्ता पूर्ण जानकारी प्राप्त करके घटनाओं व विद्यार्थियों की प्रकृति व उनकी गम्भीरता का सूक्ष्म अध्ययन करता है।

④ कारण परिणामों के सम्बंध का पता लगाना → अवलोकन का कार्य केवल देखना ही नहीं होता है बल्कि उसका उद्देश्य कारण परिणाम के सम्बंध को जानना भी होता है। अवलोकनकर्ता स्वयं घटना को देखकर अनिवार्य कारणों तथा परिणामों के सम्बंध स्थापित करता है।

Scanned with CamScanner

⑤ अनुभविक अध्ययन → अवलोकन की यह विशेषता है कि यह कल्पना पर आधारित न होकर अनुभव पर आधारित होता है। मौजन ने अवलोकन को अनुभव पर आधारित अध्ययन माना है।

⑥ वैज्ञानिक शुद्धता → अवलोकन पद्धति स्वयं देखने पर आधारित है अर्थात् अवलोकनकर्ता अपनी आँखों से घटना का निरीक्षण करता है, उसकी भली भाँति जाँच करता है। अतः उसका निर्णय दूसरे के कथन पर आधारित नहीं होता है, वह स्वयं ही सूक्ष्म अध्ययन करता है अतः घटनाओं को स्वाभाविकता तथा तटस्थता के दृष्टिकोण से देखा जा सकता है।

⑦ प्रत्यक्ष पद्धति → प्रत्यक्ष पद्धति भी अवलोकन की एक विशेषता है जिसका अर्थ है अध्ययनकर्ता को सामग्री स्रोत से प्रत्यक्ष रूप से होता है। अतः इसमें मानव व्यवहार को समझने की विशेषता पायी जाती है अर्थात् सामग्री का संग्रहण व्यक्तियों से प्रत्यक्ष रूप से किया जाता है।

Scanned with CamScanner

आत्मकथा →

मानकीकृत एवं अमानकीकृत या शिक्षक निर्मित साधनों के अलावा कुछ साधन ऐसे भी हो सकते हैं जिनमें छात्र स्वयं से सम्बन्धित सूचनाएँ स्वयं ही प्रदान करता है. इन्हें 'आत्म-विवरणात्मक" साधन कह सकते हैं, स्वयं व्यक्ति द्वारा अपना विवरण प्रस्तुत किया जाना व्यक्तित्व मूल्यांकन का प्रमुख तरीका है।

विद्यार्थियों के विषय में जीवन-कहानी द्वारा सूचनाएँ प्राप्त करना एक रोचक विधि है। कई मामलों में अपनी जीवन कहानियों द्वारा छात्रों ने ऐसी महत्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध की है जो किसी अन्य विधि से सम्भवतः नहीं की जा सकती है। यह पद्धति किसी भी बालक के आदर्शों, आकांक्षाओं, रुचियों और समस्याओं को समझने में पर्याप्त सहायता दे सकती है। इसके द्वारा प्राप्त जानकारी पहले से ही एकत्रित किये गये तथ्यों व समस्याओं पर प्रकाश डाल सकती है। इसके साथ ही साथ विद्यार्थियों को स्वयं के शब्दों में और स्वयं के विषय में लिखने का अवसर उनको अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है।

इस विधि द्वारा अधिक संतोषजनक परिणामों के लिए बालकों को एक रूप रेखा देनी चाहिए। इससे उनके लिए आत्म-कथा लिखने का कार्य सरल हो जाता है।

Scanned with CamScanner

अतः निम्न रूप-रेखा सुझाव के रूप में प्रस्तुत की जा सकती है-

① छात्र का प्रारम्भिक इतिहास
② परिवार का इतिहास
③ स्वास्थ्य एवं शारीरिक आलेख
④ विद्यालय के सम्बंध में छात्र का इतिहास
⑤ रुचि, अवकाश, समय की क्रीड़ाएँ, यात्रा अनुभव तथा मिलता
⑥ व्यावसायिक अनुभव अथवा कार्य अनुभव
⑦ भविष्य के लिए शैक्षणिक कार्यक्रम
⑧ दीर्घकालीन व्यावसायिक योजनाएँ
⑨ शादी एवं गृहस्थ जीवन के लिए इच्छाएँ व योजनाएँ।

छात्रों के लिए अपने निजी अनुभवों व बातों को स्वतंत्रतापूर्वक और पूर्णता के साथ लिखना कठिन कार्य है क्योंकि वे उन बातों को लिखने में झिझक महसूस करते हैं उनकी दृष्टि से अवांछनीय हो। वे तब तक कुछ बातों का उल्लेख नहीं करेंगे जब तक कि उन्हें यह विदित नहीं होगा कि वे गोपनीय रखी जाएँगी; अतः यह ठीक होगा कि आत्मकथा लिखते समय ही इस प्रकार का आश्वासन दे दिया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner